

Ivan Barbosa Rigolin



LEI Nº 14.133/2021 COMENTADA

Uma visão crítica

Área específica

DIREITO ADMINISTRATIVO

Áreas afins

DIREITO CONSTITUCIONAL,
CIVIL E PÚBLICO

Público-alvo/consumidores

SERVIDORES PÚBLICOS, ADVOGADOS,
JUÍZES, PROMOTORES E ESTUDANTES.

Esta é a visão crítica da Lei nº 14.133, de 2021, em comentários artigo por artigo, do autor que jamais escreveria comentários desprovidos dessa análise. Não lhe parece suficiente nem que atenda a expectativa simplesmente desfilarmos os componentes da nova lei com toda comodidade e sem nenhum comprometimento com a sua constitucionalidade e juridicidade ante os diplomas que toda lei precisa observar. Não é porque emana da União que uma lei goza de pressuposição de legitimidade dentro do ordenamento que passa a integrar contra todas as lições acadêmicas de que o ato administrativo tem presunção de legalidade e de legitimidade. Neste momento da história do país, isso não traduz a verdade, e é preciso apontar, ao lado das virtudes a enaltecer, os defeitos, as imperfeições e as falhas de toda natureza que acaso existam na legislação que se edita. Foi essa a tentativa do autor.

FORMATO: 14,5 X 21,5 cm
CÓDIGO: 10003152

R5721 Rigolin, Ivan Barbosa
Lei nº 14.133/2021 comentada: uma visão crítica / Ivan Barbosa Rigolin. - Belo Horizonte : Fórum, 2022.

508 p. ; 14,5cm x 21,5cm.

ISBN: 978-65-5518-285-9

1. Direito administrativo. 2. Direito constitucional. 3. Direito civil. 4. Direito público.
I. Título.

2021 -
4010

CDD 341.3
CDU 342.9

Ivan Barbosa Rigolin

Advogado administrativista graduado pela Universidade de São Paulo. Ex-professor universitário, consultor, parecerista e autor de 12 (doze) livros próprios sobre os temas das licitações e contratos, dos servidores públicos, de bens e serviços públicos, parcerias do poder público e outros assuntos de direito público. Coautor de cerca de duas dezenas de livros. Articulista com mais de mil e quinhentas publicações de artigos sobre vasta gama de temas publicísticos.

SUMÁRIO

| | |
|----------------------------|-----|
| APRESENTAÇÃO | 13 |
| LEI Nº 14.133/21 COMENTADA | |
| UMA VISÃO CRÍTICA | 17 |
| Impressões iniciais | 17 |
| Art. 1º | 20 |
| Art. 2º | 30 |
| Art. 3º | 33 |
| Art. 4º | 34 |
| Art. 5º | 36 |
| Art. 6º | 40 |
| Art. 7º | 72 |
| Art. 8º | 74 |
| Art. 9º | 76 |
| Art. 10 | 79 |
| Art. 11 | 81 |
| Art. 12 | 83 |
| Art. 13 | 87 |
| Art. 14 | 88 |
| Art. 15 | 94 |
| Art. 16 | 97 |
| Art. 17 | 99 |
| Art. 18 | 102 |
| Art. 19 | 109 |
| Art. 20 | 111 |
| Art. 21 | 112 |
| Art. 22 | 113 |
| Art. 23 | 116 |
| Art. 24 | 121 |
| Art. 25 | 122 |
| Art. 26 | 127 |
| Art. 27 | 130 |
| Art. 28 | 131 |
| Art. 29 | 133 |
| Art. 30 | 135 |
| Art. 31 | 137 |
| Art. 32 | 140 |
| Art. 33 | 143 |
| Art. 34 | 145 |
| Art. 35 | 147 |
| Art. 36 | 149 |
| Art. 37 | 152 |
| Art. 38 | 154 |
| Art. 39 | 155 |
| Art. 40 | 159 |
| Art. 41 | 164 |
| Art. 42 | 167 |
| Art. 43 | 170 |
| Art. 44 | 172 |
| Art. 45 | 173 |
| Art. 46 | 175 |
| Art. 47 | 181 |
| Art. 48 | 184 |
| Art. 49 | 186 |

| | |
|---------------|-----|
| Art. 50 | 188 |
| Art. 51 | 190 |
| Art. 52 | 192 |
| Art. 53 | 194 |
| Art. 54 | 197 |
| Art. 55 | 199 |
| Art. 56 | 202 |
| Art. 57 | 205 |
| Art. 58 | 206 |
| Art. 59 | 208 |
| Art. 60 | 211 |
| Art. 61 | 214 |
| Art. 62 | 216 |
| Art. 63 | 217 |
| Art. 64 | 221 |
| Art. 65 | 223 |
| Art. 66 | 224 |
| Art. 67 | 225 |
| Art. 68 | 233 |
| Art. 69 | 236 |
| Art. 70 | 240 |
| Art. 71 | 242 |
| Art. 72 | 244 |
| Art. 73 | 247 |
| Art. 74 | 248 |
| Art. 75 | 254 |
| Art. 76 | 271 |
| Art. 77 | 280 |
| Art. 78 | 281 |
| Art. 79 | 283 |
| Art. 80 | 286 |
| Art. 81 | 289 |
| Art. 82 | 292 |
| Art. 83 | 298 |
| Art. 84 | 299 |
| Art. 85 | 300 |
| Art. 86 | 302 |
| Art. 87 | 305 |
| Art. 88 | 307 |
| Art. 89 | 310 |
| Art. 90 | 312 |
| Art. 91 | 315 |
| Art. 92 | 317 |
| Art. 93 | 324 |
| Art. 94 | 326 |
| Art. 95 | 328 |
| Art. 96 | 332 |
| Art. 97 | 334 |
| Art. 98 | 336 |
| Art. 99 | 337 |
| Art. 100..... | 338 |
| Art. 101..... | 339 |
| Art. 102..... | 340 |
| Art. 103..... | 343 |
| Art. 104..... | 346 |
| Art. 105..... | 350 |
| Art. 106..... | 351 |
| Art. 107..... | 353 |

| | |
|---------------|-----|
| Art. 108..... | 354 |
| Art. 109..... | 355 |
| Art. 110..... | 356 |
| Art. 111..... | 358 |
| Art. 112..... | 359 |
| Art. 113..... | 360 |
| Art. 114..... | 361 |
| Art. 115..... | 362 |
| Art. 116..... | 365 |
| Art. 117..... | 366 |
| Art. 118..... | 369 |
| Art. 119..... | 370 |
| Art. 120..... | 371 |
| Art. 121..... | 372 |
| Art. 122..... | 376 |
| Art. 123..... | 379 |
| Art. 124..... | 380 |
| Art. 125..... | 385 |
| Art. 126..... | 387 |
| Art. 127..... | 389 |
| Art. 128..... | 390 |
| Art. 129..... | 391 |
| Art. 130..... | 392 |
| Art. 131..... | 393 |
| Art. 132..... | 395 |
| Art. 133..... | 396 |
| Art. 134..... | 397 |
| Art. 135..... | 398 |
| Art. 136..... | 400 |
| Art. 137..... | 401 |
| Art. 138..... | 408 |
| Art. 139..... | 411 |
| Art. 140..... | 413 |
| Art. 141..... | 416 |
| Art. 142..... | 419 |
| Art. 143..... | 420 |
| Art. 144..... | 421 |
| Art. 145..... | 423 |
| Art. 146..... | 425 |
| Art. 147..... | 426 |
| Art. 148..... | 429 |
| Art. 149..... | 430 |
| Art. 150..... | 431 |
| Art. 151..... | 432 |
| Art. 152..... | 434 |
| Art. 153..... | 435 |
| Art. 154..... | 436 |
| Art. 155..... | 437 |
| Art. 156..... | 442 |
| Art. 157..... | 446 |
| Art. 158..... | 447 |
| Art. 159..... | 449 |
| Art. 160..... | 450 |
| Art. 161..... | 452 |
| Art. 162..... | 454 |
| Art. 163..... | 456 |
| Art. 164..... | 458 |
| Art. 165..... | 459 |

| | |
|---------------|-----|
| Art. 166..... | 462 |
| Art. 167..... | 463 |
| Art. 168..... | 464 |
| Art. 169..... | 465 |
| Art. 170..... | 467 |
| Art. 171..... | 469 |
| Art. 172..... | 471 |
| Art. 173..... | 471 |
| Art. 174..... | 473 |
| Art. 175..... | 478 |
| Art. 176..... | 479 |
| Art. 177..... | 481 |
| Art. 178..... | 482 |
| Art. 179..... | 493 |
| Art. 180..... | 494 |
| Art. 181..... | 495 |
| Art. 182..... | 496 |
| Art. 183..... | 497 |
| Art. 184..... | 499 |
| Art. 185..... | 500 |
| Art. 186..... | 501 |
| Art. 187..... | 502 |
| Art. 188..... | 503 |
| Art. 189..... | 503 |
| Art. 190..... | 504 |
| Art. 191..... | 505 |
| Art. 192..... | 506 |
| Art. 193..... | 507 |
| Art. 194..... | 508 |